CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2022 with Solution PDF-Set 2/6/3 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 40

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 7 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2, 3, 4, 7 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 – 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
बरसात में प्रकृति का रूप [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के अनुरूप अनुभव, कल्पना और संवेदना का सहज मेल होता है। प्रकृति के वर्णन में दृश्य के साथ ध्वनि, गंध और स्पर्श का अनुभव लेख को सजीव बनाता है।
- विषय का केंद्र बरसात में प्रकृति का बदलता रूप है। प्रभावशाली आरंभ, क्रमबद्ध चित्रण और भावपूर्ण समापन रखते हुए लेख की भाषा सरल तथा चित्रात्मक होनी चाहिए।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की रूपरेखा शीर्षक के बाद ग्रीष्म की तपन से वर्षा के आगमन तक का परिवर्तन दिखाएँ। फिर आकाश, मिट्टी, पेड़-पौधों, पक्षियों और खेतों का वर्णन करें। अंत में वर्षा से मिलने वाली ताजगी तथा प्रकृति के प्रति अपने भाव व्यक्त करें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र की तरह पता या संबोधन जोड़ना आवश्यक नहीं है।

चरण 2: वर्णन को सजीव बनाने की योजना मिट्टी की सोंधी गंध, पत्तों पर चमकती बूँदें और वर्षा की टप-टप जैसी अनुभूतियों को स्वाभाविक क्रम में जोड़ें। केवल वस्तुओं की सूची देने के बजाय उनके माध्यम से प्रकृति के उल्लास को उभारें। नीचे दिया गया नमूना निर्धारित शब्द-सीमा में विषय का विकास करता है।

चरण 3: संपूर्ण रचनात्मक लेख **बरसात में प्रकृति का रूप**

कई दिनों की तपती धूप के बाद जब आकाश में काले बादल घिरते हैं, तो लगता है कि धरती की प्रार्थना सुन ली गई है। ठंडी हवा के झोंके आते हैं और देखते ही देखते बूँदें सूखी मिट्टी को चूमने लगती हैं। मिट्टी की सोंधी गंध मन को अनोखी प्रसन्नता से भर देती है।

बरसात में प्रकृति जैसे नया परिधान पहन लेती है। धूल से ढके पेड़ धुलकर हरे हो उठते हैं। पत्तों पर ठहरी बूँदें मोतियों की तरह चमकती हैं। घास का कोमल कालीन दूर तक बिछ जाता है। फूलों के रंग और भी निखर आते हैं। पक्षी पंख फड़फड़ाकर वर्षा का स्वागत करते हैं। कहीं मेंढकों की टर्राहट सुनाई देती है, तो कहीं छत से गिरती बूँदों की टप-टप मधुर संगीत रचती है।

खेतों में हरियाली देखकर किसान के चेहरे पर आशा खिल उठती है। सूखे तालाब फिर भरने लगते हैं और बहता पानी धरती में नई गति भर देता है। वर्षा केवल मौसम नहीं बदलती; वह जीवन में ताजगी और उत्साह भी जगाती है। इस सुंदर रूप को देखते हुए मन चाहता है कि हम पेड़ों और जलस्रोतों की रक्षा करें, ताकि प्रकृति का यह उत्सव बना रहे।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में बरसात के आगमन से प्रकृति के निखार तक का क्रमबद्ध, संवेदनापूर्ण चित्रण है। अंतिम विचार वर्षा की सुंदरता को प्रकृति-संरक्षण की भावना से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: वर्षा का चित्र खींचते समय रंग, ध्वनि और गंध के ठोस बिंब चुनें तथा हर अनुच्छेद को शीर्षक से जुड़ा रखें।

1(ख). निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 – 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
गाँव में स्वास्थ्य सुविधाएँ [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा सजीव दृश्य, समस्या और समाधान क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं।
- ग्रामीण स्वास्थ्य पर लिखते समय प्राथमिक उपचार, चिकित्सा तक पहुँच, स्वच्छता और जनसहभागिता के संबंध को स्पष्ट करना उपयोगी है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति लेख का आरंभ गाँव के जीवन से जुड़े दृश्य से करें। फिर स्वास्थ्य केंद्रों की आवश्यकता और सुविधाओं की कमी का प्रभाव बताएँ। अंत में व्यावहारिक उपाय तथा स्वस्थ गाँव की कल्पना प्रस्तुत करें। भाषा सहज और संवेदनशील रखें तथा किसी विशेष गाँव के बारे में अप्रमाणित आँकड़े न दें। शीर्षक के नीचे अनुच्छेदों में लिखा गया निम्न मॉडल उत्तर निर्धारित शब्दसीमा के

अनुरूप है।

चरण 2: पूर्ण रचनात्मक लेख **गाँव में स्वास्थ्य सुविधाएँ**

सुबह का उजाला खेतों तक पहुँच चुका है, पर बीमार बच्चे को गोद में लिए खड़ी माँ की चिंता अभी नहीं मिटी। गाँव से अस्पताल दूर है और वहाँ पहुँचने का साधन भी आसानी से नहीं मिलता। यह दृश्य बताता है कि स्वास्थ्य सुविधाएँ ग्रामीण जीवन की कितनी बड़ी आवश्यकता हैं।

गाँव में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र केवल एक भवन नहीं, लोगों के लिए भरोसे का स्थान होना चाहिए। वहाँ चिकित्सक, प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी, आवश्यक दवाएँ और जाँच की सुविधाएँ नियमित रूप से उपलब्ध हों। गर्भवती महिलाओं की देखभाल, बच्चों का टीकाकरण और बुजुर्गों का उपचार समय पर मिले तो अनेक कठिनाइयाँ कम हो सकती हैं। आपातकाल में एंबुलेंस की सुविधा भी जरूरी है।

उपचार के साथ बीमारी से बचाव पर ध्यान देना होगा। स्वच्छ पेयजल, साफ नालियाँ, पौष्टिक भोजन और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी गाँव को स्वस्थ बनाते हैं। पंचायत, विद्यालय और स्वास्थ्यकर्मी मिलकर जागरूकता अभियान चला सकते हैं।

ग्रामीण स्वास्थ्य को मजबूत करना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं; समुदाय की भागीदारी भी आवश्यक है। जब उपचार घर के पास और सबकी पहुँच में होगा, तभी गाँव की खुशहाली सचमुच पूरी होगी।

चरण 3: निष्कर्ष लेख में ग्रामीण जीवन का दृश्य, चिकित्सा की आवश्यकता, सुविधाओं के विस्तार और सामुदायिक सहयोग को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है। अंतिम अनुच्छेद स्वस्थ गाँव को खुशहाली से जोड़कर विषय को सार्थक समापन देता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय पर पहले स्वास्थ्य केंद्र और उपचार की चर्चा करें, फिर स्वच्छता तथा जनसहयोग जोड़ें; इससे लेख समस्या तक सीमित नहीं रहेगा।

1(ग). निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 – 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
मेरे विद्यालय का खेल मैदान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में दिए गए विषय को व्यक्तिगत अनुभव, कल्पना और संवेदनशील भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। खेल मैदान के वर्णन में उसका दृश्य, वहाँ होने वाली गतिविधियाँ और विद्यार्थी के जीवन में उसका महत्त्व एक सूत्र में जुड़े होने चाहिए।
- इस विषय का केंद्र विद्यालय का अपना मैदान है। इसलिए वर्णन को केवल खेलों के सामान्य लाभों तक सीमित रखने के बजाय मैदान से जुड़ी स्मृतियाँ, अनुभूतियाँ और सीख शामिल करनी चाहिए। लेख का आरंभ आकर्षक और समापन विषय के भाव को स्पष्ट करने वाला हो।

चरण 1: लेख का प्रारूप और विषय का विस्तार सबसे ऊपर दिए हुए विषय के अनुरूप शीर्षक लिखें। आरंभ में मैदान का कोई जीवंत दृश्य रखें। मध्य भाग में अवकाश, खेल की कक्षाओं और प्रतियोगिताओं के अनुभवों को जोड़ें। अंतिम भाग में बताएँ कि यह मैदान अनुशासन, सहयोग और साहस कैसे सिखाता है। रचनात्मक लेख में पत्र का पता, संबोधन या हस्ताक्षर आवश्यक नहीं होते।

चरण 2: भाषा और शब्द-सीमा की योजना लगभग 150–200 शब्दों के लेख के लिए तीन छोटे अनुच्छेद उपयुक्त हैं। पहले अनुच्छेद में स्थान और वातावरण, दूसरे में गतिविधियाँ तथा तीसरे में अनुभव और भाव रखें। मिट्टी की गंध, बच्चों की आवाज़ और खेलते साथियों जैसे बिंब वर्णन को स्वाभाविक बनाएँगे। एक ही लाभ को बार-बार दोहराने से बचें और वर्णन को विद्यालय के मैदान से जोड़े रखें। नीचे इसी योजना पर एक पूरा नमूना लेख दिया गया है।

चरण 3: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख **मेरे विद्यालय का खेल मैदान**

सुबह की सुनहरी धूप जब मेरे विद्यालय के खेल मैदान पर बिछती है, तो वह किसी खुले निमंत्रण जैसा लगता है। चारों ओर खड़े नीम के पेड़, किनारे रखे गोलपोस्ट और बीच में खिंची सफेद रेखाएँ उसकी पहचान हैं। प्रार्थना के समय यही मैदान हमारी एकता का साक्षी बनता है।

अवकाश की घंटी बजते ही यहाँ मानो खुशियों का मेला लग जाता है। कहीं फुटबॉल के पीछे दौड़ते कदम होते हैं, तो कहीं कबड्डी खेलते

बच्चों की आवाज़ें गूँजती हैं। मुझे दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलना सबसे अच्छा लगता है। एक बार अंतिम गेंद पर कैच छूट जाने से हमारी टीम हार गई थी। मैं उदास था, लेकिन साथियों ने मेरा हौसला बढ़ाया। उस दिन समझ आया कि खेल में जीत जितनी महत्त्वपूर्ण है, उतना ही जरूरी है एक-दूसरे का साथ देना।

यह मैदान हमारे लिए केवल दौड़ने की जगह नहीं, जीवन की पाठशाला है। यहाँ हार स्वीकारना, नियम मानना और फिर प्रयास करना सीखते हैं। वर्षा के बाद इसकी मिट्टी की सोंधी गंध मुझे बहुत प्रिय लगती है। जब भी विद्यालय की याद आएगी, यह मैदान सबसे पहले आँखों के सामने उभरेगा।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख में विद्यालय के खेल मैदान का दृश्य, खेल का व्यक्तिगत अनुभव और उससे मिली जीवन की सीख क्रमबद्ध रूप से आए हैं। नमूना लेख का मुख्य पाठ निर्धारित 150–200 शब्दों की सीमा में है और विषय पर केंद्रित है।

त्वरित सुझाव: मैदान का वर्णन लिखते समय एक सजीव दृश्य और खेल की एक छोटी घटना जोड़ें; अंत में उसी घटना से मिली सीख लिखने पर लेख व्यक्तिगत और प्रभावपूर्ण बनेगा।

2(क). कोरोना काल में आम आदमियों द्वारा रोगियों के लिए किए गए सहायता-कार्यों की प्रशंसा करते हुए किसी हिन्दी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र सार्वजनिक महत्त्व के विषय पर समाज का ध्यान आकर्षित करता है। इसकी भाषा औपचारिक, स्पष्ट और विनम्र होती है।
- इस पत्र का केंद्र कोरोना काल में सामान्य नागरिकों की सेवा है। सहायता के ठोस उदाहरण देकर उनकी प्रशंसा और ऐसे प्रयासों को प्रोत्साहन देने का अनुरोध करना आवश्यक है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित कीजिए क्रमशः प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पद और समाचार-पत्र का नाम-पता लिखेंगे। विषय में कोरोना काल में नागरिकों के सहायता-कार्यों की प्रशंसा स्पष्ट करेंगे। इसके बाद संबोधन, मुख्य कथ्य, विनम्र अनुरोध और हस्ताक्षर आएँगे। व्यक्तिगत परिचय को लंबा करने के स्थान पर जनहित के मुद्दे को प्रमुखता देंगे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाइए आरंभ में महामारी के दौरान रोगियों और उनके परिवारों की कठिनाइयों का संक्षिप्त उल्लेख करेंगे। फिर भोजन, दवाइयाँ, ऑक्सीजन की व्यवस्था में सहयोग, अस्पताल की जानकारी और रक्तदान जैसे सहायता-कार्यों को उदाहरण बनाएँगे। अंत में नागरिकों की संवेदनशीलता की सराहना करते हुए समाचार-पत्र से उनकी सेवाओं को स्थान देने का अनुरोध करेंगे। किसी अप्रमाणित आँकड़े या वास्तविक व्यक्ति के नाम का सहारा लेना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: पूर्ण नमूना पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली–110059
20 जुलाई, 2022
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण,
नई दिल्ली।

विषय: कोरोना काल में नागरिकों के सहायता-कार्यों की प्रशंसा हेतु।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं उन सामान्य नागरिकों के सेवाभाव की प्रशंसा करना चाहता हूँ, जिन्होंने कोरोना काल में रोगियों और उनके परिजनों को सहारा दिया। संकट की घड़ी में अनेक परिवार भोजन, दवाइयों और उपचार की व्यवस्था को लेकर परेशान थे। ऐसे समय में स्वयंसेवकों ने जरूरतमंदों तक भोजन पहुँचाया, दवाइयाँ उपलब्ध कराईं और अस्पतालों में बिस्तर तथा ऑक्सीजन की उपलब्धता संबंधी जानकारी साझा की। कई लोगों ने रोगियों को अस्पताल पहुँचाने तथा रक्तदान में भी सहयोग किया।

इन नागरिकों ने धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से ऊपर उठकर मानवीय एकता का परिचय दिया। उनके निस्स्वार्थ प्रयासों से रोगियों का मनोबल बढ़ा और असहाय परिवारों को आशा मिली। यह सेवा समाज के लिए प्रेरणादायक है।

आपसे अनुरोध है कि अपने समाचार-पत्र में ऐसे सहायता-कार्यों को प्रमुखता दें तथा नागरिकों से सुरक्षित और जिम्मेदार ढंग से जरूरतमंदों की सहायता जारी रखने की अपील करें।

धन्यवाद।
भवदीय,
अजय कुमार

चरण 4: निष्कर्ष यह पत्र औपचारिक प्रारूप में सामान्य नागरिकों की निस्स्वार्थ सेवा की प्रशंसा करता है और संपादक से उनके कार्यों को सार्वजनिक प्रोत्साहन देने का अनुरोध करता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में भोजन, दवा और उपचार में सहयोग के उदाहरण अवश्य दें; पत्र को केवल महामारी की समस्याओं का वर्णन न बनने दें।

अथवा

2(ख). आप खुशी/खुशवंत हैं। आपका ए.टी.एम. कार्ड कहीं खो गया है। आपने फोन द्वारा अपना कार्ड ब्लॉक करवा दिया है। आपको दूसरा ए.टी.एम. कार्ड चाहिए। अपनी समस्या तथा आवश्यकता का उल्लेख करते हुए बैंक प्रबंधक को आवेदन-पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बैंक प्रबंधक को दिया जाने वाला आवेदन औपचारिक पत्र है। उसमें प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, समस्या, स्पष्ट अनुरोध और हस्ताक्षर का क्रम रखा जाता है।
- प्रश्न की दोनों बातें स्पष्ट लिखनी आवश्यक हैं: खोया हुआ ए.टी.एम. कार्ड फोन से पहले ही ब्लॉक कराया जा चुका है और अब नया कार्ड चाहिए। खाता पहचानने योग्य विवरण तथा आवश्यक प्रक्रिया पूरी करने की सहमति आवेदन को उपयोगी बनाती है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप तय करना प्रेषक के रूप में खुशी का नाम चुना गया है। ऊपर उसका पता और दिनांक लिखेंगे। इसके बाद बैंक प्रबंधक का पदनाम, बैंक और शाखा का पता देंगे। विषय-पंक्ति में नए ए.टी.एम. कार्ड की आवश्यकता बताएँगे। संबोधन के बाद विनम्र और संक्षिप्त भाषा में आवेदन लिखेंगे। अंत में धन्यवाद, समापन, नाम और खाता संख्या देंगे। यहाँ प्रयुक्त पते तथा खाता संख्या नमूने के लिए हैं।

चरण 2: समस्या और अनुरोध की रूपरेखा पहले बैंक में बचत खाता होने का उल्लेख करेंगे। फिर बताएँगे कि कार्ड खो गया है और उसकी सुरक्षा के लिए फोन द्वारा उसे ब्लॉक कराया जा चुका है। इसके बाद दैनिक बैंकिंग कार्यों में होने वाली कठिनाई बताकर नया कार्ड जारी करने का अनुरोध करेंगे। निर्धारित आवेदन तथा दस्तावेज देने की तत्परता भी व्यक्त करेंगे। कार्ड खोने की घटना और उसे ब्लॉक कराने की सूचना अलग-अलग स्पष्ट रहेंगी।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आवेदन-पत्र 24, शांति विहार
नई दिल्ली – 110092
30 अगस्त, 2022
सेवा में,
शाखा प्रबंधक महोदय,
भारतीय स्टेट बैंक,
शांति विहार शाखा, नई दिल्ली।
विषय: खोए हुए ए.टी.एम. कार्ड के स्थान पर नया कार्ड जारी करने हेतु आवेदन।
महोदय,

सविनय निवेदन है कि आपकी शाखा में मेरा बचत खाता संख्या 12345678901 है। मेरा ए.टी.एम. कार्ड कहीं खो गया है। बहुत खोजने के बाद भी वह नहीं मिला। कार्ड का दुरुपयोग रोकने के लिए मैंने तत्काल बैंक की दूरभाष सेवा से संपर्क करके उसे ब्लॉक करवा दिया है।

कार्ड न होने से नकद निकासी तथा अन्य आवश्यक बैंकिंग कार्यों में कठिनाई हो रही है। अतः आपसे अनुरोध है कि पुराने ब्लॉक किए गए कार्ड के स्थान पर मेरे खाते के लिए नया ए.टी.एम. कार्ड जारी करने की कृपा करें। मैं निर्धारित आवेदन-पत्र, पहचान संबंधी दस्तावेज तथा आवश्यक शुल्क देने के लिए तैयार हूँ। कृपया आगे की प्रक्रिया से भी अवगत कराएँ।

धन्यवाद।

भवदीया,
खुशी
खाता संख्या: 12345678901

चरण 4: निष्कर्ष इस आवेदन में कार्ड खोने, फोन से ब्लॉक करवाने और नया कार्ड जारी करने की आवश्यकता स्पष्ट है। औपचारिक प्रारूप तथा विनम्र अनुरोध के साथ खुशी का पूरा आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: विषय में नए कार्ड की माँग लिखें और मुख्य अनुच्छेद में यह अवश्य बताएँ कि पुराने कार्ड को फोन द्वारा पहले ही ब्लॉक कराया जा चुका है।

3(i)(क). नाटक में 'स्वगत कथन' से आप क्या समझते हैं ? आजकल इसे नाटक में कैसे प्रयोग किया जाता है और उसे क्या कहते हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वगत कथन में पात्र अपने मन के विचार स्वयं से बात करते हुए प्रकट करता है। दर्शक उसे सुनते हैं, किंतु मंच पर उपस्थित दूसरे पात्र उसे सुना हुआ नहीं मानते।
- आधुनिक प्रस्तुति में पात्र की आंतरिक आवाज़ को अलग से सुनाने की तकनीक वॉइस ओवर कहलाती है। इसका उद्देश्य मनोभावों को दर्शकों तक पहुँचाना है।

चरण 1: स्वगत कथन का अर्थ समझना स्वगत कथन वह कथन है जिसमें नाटक का कोई पात्र अपने आप से बातचीत करता है। इसके माध्यम से उसके मन की दुविधा, चिंता, इच्छा अथवा निर्णय दर्शकों के सामने आता है। यह दूसरे पात्र को संबोधित सामान्य संवाद नहीं होता। मंच पर कोई अन्य पात्र उपस्थित हो, तब भी नाटकीय परंपरा के अनुसार वह इस कथन को नहीं सुनता; दर्शक ही पात्र के अंतर्मन से परिचित होते हैं। इस प्रकार लेखक उन मानसिक स्थितियों को व्यक्त कर पाता है जो बाहरी क्रिया से पूरी तरह स्पष्ट नहीं होतीं।

चरण 2: आज के नाटक में प्रयुक्त रूप बताना आजकल लंबे स्वगत कथन का प्रयोग अपेक्षाकृत कम किया जाता है। पात्र के मन में चल रहे विचारों को व्यक्त करने के लिए वॉइस ओवर तकनीक का प्रयोग किया जाता है। इसमें पात्र की आंतरिक आवाज़ पृष्ठभूमि से सुनाई जाती है और मंच पर उसकी स्थिति या प्रतिक्रिया दिखाई जा सकती है। इस आवाज़ का संबंध उसके मन के विचारों से होता है, दूसरे पात्रों के साथ चल रहे प्रत्यक्ष वार्तालाप से नहीं। इसलिए आवाज़ सुनाई देने पर भी उसे मंच के सभी पात्रों द्वारा सुना गया संवाद नहीं माना जाता।

चरण 3: निष्कर्ष स्वयं से किया गया पात्र का कथन स्वगत कथन है। आधुनिक नाटक में उसके अंतर्मन को पृष्ठभूमि की आवाज़ से प्रकट करने का रूप वॉइस ओवर कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा लिखकर यह भेद अवश्य जोड़ें कि स्वगत को दर्शक सुनते हैं, दूसरे पात्र नहीं; फिर आधुनिक तकनीक का नाम वॉइस ओवर दें।

अथवा

3(i)(ख). कहानी से आप क्या समझते हैं ? यह भी लिखिए कि कहानी का संबंध किन लोगों से जुड़ता है और नाटक का संबंध किनसे होता है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी जीवन की किसी घटना, अनुभव या संवेदना की ऐसी कथात्मक रचना है जिसमें पात्रों और घटनाओं से एक प्रभावपूर्ण अनुभूति विकसित होती है।
- कहानी का संप्रेषण लेखक और पाठक के बीच होता है; नाटक में नाटककार, निर्देशक, अभिनेता तथा दर्शक मिलकर संप्रेषण को पूरा करते हैं।

चरण 1: कहानी का स्वरूप स्पष्ट करना कहानी गद्य साहित्य की वह कथात्मक विधा है जिसमें जीवन के किसी प्रसंग, अनुभव अथवा संवेदना को पात्रों और घटनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। उसका कथानक सामान्यत: एक केंद्रीय प्रभाव के आसपास विकसित होता है। लेखक वर्णन, कथन और संवाद के सहारे वातावरण बनाता है तथा पात्रों के मन की बातें भी सीधे बता सकता है। पाठक इन शब्दों को पढ़कर अपनी कल्पना में घटनाओं और चरित्रों का रूप बनाता है। इसलिए कहानी केवल घटनाओं की सूची नहीं, उनका कलात्मक और प्रभावपूर्ण संगठन है।

चरण 2: दोनों विधाओं से जुड़े लोगों का भेद बताना कहानी का मूल संबंध लेखक और पाठक से जुड़ता है। लेखक लिखित भाषा में अपना अनुभव प्रस्तुत करता है और पाठक उसे पढ़कर ग्रहण करता है। नाटक का संबंध नाटककार के साथ निर्देशक, अभिनेताओं और दर्शकों से होता है। नाटककार के लिखे संवाद और घटनाएँ निर्देशक की योजना तथा अभिनेताओं के अभिनय से मंच पर जीवंत होते हैं। दर्शक उन्हें घटित होते हुए देखते और सुनते हैं। मंच-सज्जा, प्रकाश और ध्वनि से जुड़े सहयोगी भी प्रस्तुति में योगदान देते हैं। इस प्रकार कहानी का पाठ व्यक्तिगत पठन में पूरा हो सकता है, जबकि नाटक की रंगमंचीय प्रस्तुति सामूहिक सहयोग से साकार होती है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी जीवन के किसी प्रसंग या संवेदना की कलात्मक कथात्मक अभिव्यक्ति है। उसका संबंध लेखक-पाठक से तथा नाटक का संबंध नाटककार, निर्देशक, अभिनेता और दर्शक से होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले कहानी की परिभाषा दें, फिर लेखक-पाठक और नाटककार-निर्देशक-अभिनेता-दर्शक की क्रमवार तुलना करें।

3(ii)(क). रेडियो नाटक की अवधि सीमित क्यों रखी जाती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम की रचना है; श्रोता संवाद, संगीत और ध्वनि के आधार पर दृश्य की कल्पना करता है।
- अवधि तय करते समय श्रोता की एकाग्रता और कथा की सघनता का ध्यान रखा जाता है।

चरण 1: श्रव्य माध्यम की सीमा समझें रेडियो नाटक में पात्रों के चेहरे, अभिनय और दृश्य दिखाई नहीं देते। श्रोता केवल आवाज़ों से पात्रों और घटनाओं को पहचानता तथा कल्पना में उनका चित्र बनाता है। लंबे समय तक केवल सुनकर इस मानसिक प्रक्रिया को बनाए रखना कठिन होता है; इसलिए बहुत लंबा नाटक श्रोता को थका सकता है और उसका ध्यान भटका सकता है।

चरण 2: सीमित अवधि का उद्देश्य बताएँ श्रोता की रुचि और एकाग्रता बनाए रखने के लिए रेडियो नाटक की अवधि सीमित रखी जाती है। कथा को अनावश्यक विस्तार से बचाकर घटनाओं और संवादों को चुस्त रखा जाता है, ताकि श्रोता आरंभ से अंत तक कथानक से जुड़ा रहे और उसका प्रभाव ग्रहण कर सके।

चरण 3: निष्कर्ष केवल श्रवण पर निर्भर श्रोता का ध्यान लंबे समय तक बाँधे रखना कठिन है; इसलिए रुचि, एकाग्रता और नाटकीय प्रभाव बनाए रखने के लिए रेडियो नाटक की अवधि सीमित होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल प्रसारण का समय न लिखें; सुनने की एकाग्रता और श्रोता की रुचि से अवधि का संबंध स्पष्ट करें।

अथवा

3(ii)(ख). रेडियो नाटक और सिनेमा में क्या अंतर है और क्यों ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है, जबकि सिनेमा दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का उपयोग करता है।
- माध्यम की प्रकृति के अनुसार घटना, परिवेश और पात्रों को प्रस्तुत करने की विधि बदलती है।

चरण 1: प्रस्तुति का मूल अंतर बताएँ रेडियो नाटक में श्रोता को केवल आवाज़ सुनाई देती है। इसलिए पात्रों की वाणी, संवाद, संगीत और ध्वनि प्रभावों से ही घटनाओं और वातावरण का बोध कराया जाता है। सिनेमा में दर्शक दृश्य भी देखता है; पात्रों की वेशभूषा, हावभाव, गतिविधियाँ और स्थान कैमरे के माध्यम से प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं।

चरण 2: अंतर का कारण स्पष्ट करें रेडियो में दृश्य के अभाव के कारण आवश्यक सूचनाएँ ध्वनियों और स्वाभाविक संवादों में पिरोनी पड़ती हैं। श्रोता उनसे अपने मन में दृश्य रचता है। सिनेमा में कई बातें बिना संवाद के केवल दृश्य और अभिनय से स्पष्ट हो जाती हैं। इसीलिए दोनों की पटकथा और अभिव्यक्ति की तकनीक अलग होती है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक श्रव्य और कल्पनाप्रधान है, जबकि सिनेमा दृश्य-श्रव्य है। इसी माध्यमगत अंतर के कारण रेडियो में संवाद और ध्वनि तथा सिनेमा में दृश्य और अभिनय भी कथ्य व्यक्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना करते समय पहले श्रव्य और दृश्य-श्रव्य का अंतर लिखें, फिर बताएँ कि वही संवाद और प्रस्तुति को कैसे बदलता है।

4(i)(क). पत्रकारीय लेखन सृजनात्मक लेखन (साहित्यिक लेखन) से भिन्न क्यों है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन का आधार सत्यापित तथ्य, समसामयिक घटनाएँ और जनहित है।
- साहित्यिक लेखन में कल्पना, अनुभूति और कलात्मक अभिव्यक्ति को अधिक स्वतंत्रता होती है।

चरण 1: उद्देश्य और सामग्री का अंतर समझें पत्रकारीय लेखन का प्रमुख उद्देश्य पाठकों को घटनाओं, समस्याओं तथा सार्वजनिक महत्त्व के विषयों की सही जानकारी देना है। इसलिए इसमें तथ्य जुटाना, स्रोतों की जाँच करना और घटनाओं को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक है। लेखक अपनी कल्पना से किसी समाचार की घटना, आँकड़ा या कथन नहीं गढ़ सकता। सृजनात्मक साहित्यिक लेखन में जीवन के अनुभवों और संवेदनाओं को कलात्मक रूप दिया जाता है; लेखक पात्र, घटनाएँ और परिवेश की कल्पना कर सकता है।

चरण 2: भाषा, शैली और समय की भूमिका बताएँ पत्रकारीय लेखन व्यापक पाठक समुदाय के लिए होता है, इसलिए उसकी भाषा सामान्यतः सरल, स्पष्ट, संक्षिप्त और विषय के अनुकूल होती है। समाचार में प्रमुख सूचना को प्राथमिकता दी जाती है और समय पर प्रकाशन का विशेष महत्त्व होता है। साहित्यिक रचना में लेखक प्रतीक, बिंब, लाक्षणिक भाषा और विशिष्ट शैली से अनुभूति को विस्तार दे सकता है। उसकी रचना का मूल्य केवल तात्कालिक सूचना देने तक सीमित नहीं रहता।

चरण 3: तथ्य और दृष्टिकोण में भेद बनाएँ पत्रकार विश्लेषण या टिप्पणी में अपना विचार रख सकता है, लेकिन उसे भी तथ्य और तर्क पर आधारित होना चाहिए। समाचार में निजी पसंद को तथ्य बनाकर प्रस्तुत करना उचित नहीं है। साहित्यकार को अपनी संवेदना और दृष्टि व्यक्त करने की अधिक स्वतंत्रता मिलती है। इस प्रकार दोनों में रचनात्मक कौशल हो सकता है, किंतु पत्रकारीय लेखन की तथ्यपरक जिम्मेदारी उसे साहित्यिक लेखन से अलग बनाती है।

चरण 4: निष्कर्ष पत्रकारीय लेखन तथ्यपरकता, प्रामाणिकता, जनहित और तात्कालिकता से बँधा होता है; साहित्यिक लेखन में कल्पना और कलात्मक अनुभूति को अधिक स्वतंत्रता मिलती है। इसीलिए उनके उद्देश्य, सामग्री और भाषा-शैली भिन्न होते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को उद्देश्य, तथ्य बनाम कल्पना तथा भाषा-शैली के तीन आधारों पर लिखें; पत्रकारिता में विचार भी प्रमाण पर आधारित होते हैं।

अथवा

4(i)(ख). विशेष लेखन की भाषा शैली सामान्य लेखन से अलग क्यों होती है ? आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता से जटिल कैसे है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन किसी निश्चित विषय या क्षेत्र की गहरी जानकारी पर आधारित होता है। इसमें विषय का ज्ञान, उपयुक्त शब्दावली और तथ्यों का सही अर्थ समझाना आवश्यक है।
- आर्थिक पत्रकारिता में अर्थव्यवस्था से जुड़ी घटनाओं के साथ उनके कारणों, आँकड़ों और आम लोगों पर पड़ने वाले प्रभावों को स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: विशेष लेखन की भाषा की आवश्यकता समझिए सामान्य लेखन प्रायः व्यापक पाठक वर्ग के लिए रोजमर्रा की भाषा में किया जाता है। विशेष लेखन का संबंध अर्थव्यवस्था, विज्ञान, खेल या कानून जैसे किसी निश्चित क्षेत्र से होता है। इसलिए उसकी भाषा में उस क्षेत्र के पारिभाषिक शब्द, विशिष्ट अवधारणाएँ और सटीक विवरण आते हैं। उदाहरण के लिए आर्थिक विषय पर लिखते समय मुद्रास्फीति, राजकोषीय घाटा तथा ब्याज दर जैसे शब्दों का उपयोग आवश्यक हो सकता है। लेखक इन शब्दों का अर्थ सरल ढंग से समझाता है, ताकि विषय की शुद्धता बनी रहे और सामान्य पाठक भी बात समझ सके। इसीलिए उसकी भाषा अधिक विषयकेंद्रित, तथ्यपरक और व्याख्यात्मक होती है।

चरण 2: आर्थिक पत्रकारिता की जटिलता स्पष्ट कीजिए आर्थिक मामलों की पत्रकारिता में केवल किसी घटना की सूचना देना पर्याप्त नहीं होता। पत्रकार को बजट, कर, बैंकिंग, व्यापार, शेयर बाजार और आर्थिक नीतियों का ज्ञान होना चाहिए। उसे जटिल आँकड़ों तथा विशेषज्ञों के कथनों की जाँच करके उनका अर्थ समझना और उनके परस्पर संबंध पहचानना पड़ता है। किसी कर या ब्याज दर में परिवर्तन का उत्पादन, रोजगार, कीमतों और लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह भी बताना होता है। इसलिए इसमें सामान्य पत्रकारिता की तुलना में अधिक विषयगत तैयारी, विश्लेषण और सावधानी अपेक्षित है।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष लेखन की भाषा विषय की विशिष्ट शब्दावली और गहन व्याख्या के कारण अलग होती है। आर्थिक पत्रकारिता आर्थिक अवधारणाओं, आँकड़ों तथा नीतियों के प्रभावों को समझाने की आवश्यकता के कारण अधिक जटिल होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से अलग रखिए: पहले विशेष भाषा की आवश्यकता, फिर आर्थिक ज्ञान, आँकड़ों और प्रभावों के विश्लेषण की जरूरत बताइए।

4(ii)(क). उलटा पिरामिड शैली का विकास कहाँ और क्यों हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उलटा पिरामिड समाचार लेखन की शैली है जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य आरंभ में तथा कम महत्त्वपूर्ण विवरण उसके बाद दिए जाते हैं।
- इस शैली का विकास अमेरिका में गृहयुद्ध के दौरान समाचार जल्दी और सुरक्षित पहुँचाने की व्यावहारिक आवश्यकता से जुड़ा है।

चरण 1: विकास का स्थान और पृष्ठभूमि बताइए उलटा पिरामिड शैली का विकास अमेरिका में गृहयुद्ध के समय हुआ। उस समय युद्ध संवाददाता समाचार भेजने के लिए तार व्यवस्था का उपयोग करते थे। युद्ध की परिस्थितियों में तार का संपर्क बीच में टूट सकता था। इसलिए संवाददाताओं के लिए यह आवश्यक था कि सबसे जरूरी सूचना पहले भेज दी जाए, जिससे संदेश अधूरा रह जाने पर भी घटना की मुख्य खबर संपादक तक पहुँच सके।

चरण 2: शैली की उपयोगिता स्पष्ट कीजिए इसी आवश्यकता से पहले अनुच्छेद में मुख्य घटना और उसके प्रमुख तथ्य लिखने तथा बाद में घटते महत्त्व के क्रम में विवरण देने की पद्धति विकसित हुई। इसका एक लाभ यह भी था कि समाचार छोटा करने की जरूरत होने पर संपादक नीचे के कम महत्त्वपूर्ण अंश हटा सकता था और मुख्य सूचना सुरक्षित रहती थी। पाठक को भी शुरुआत में ही समाचार का सार

मिल जाता था।

चरण 3: निष्कर्ष उलटा पिरामिड शैली अमेरिका के गृहयुद्ध के दौरान विकसित हुई, ताकि तार संपर्क टूटने पर भी मुख्य सूचना पहले पहुँच जाए और समाचार को संक्षिप्त करना आसान हो।

त्वरित सुझाव: विकास के उत्तर में अमेरिका, गृहयुद्ध, तार संपर्क टूटने की आशंका और प्रमुख सूचना पहले भेजने की जरूरत को क्रम से जोड़िए।

अथवा

4(ii)(ख). विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक रिपोर्ट में क्या अंतर होता है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विवरणात्मक रिपोर्ट किसी घटना के तथ्यों और घटनाक्रम का व्यवस्थित परिचय देती है। विश्लेषणात्मक रिपोर्ट उन्हीं तथ्यों के कारणों, संबंधों और परिणामों की पड़ताल करती है।
- दोनों प्रकार की रिपोर्ट प्रमाणित सूचनाओं पर आधारित होनी चाहिए; विश्लेषण का अर्थ लेखक की निराधार निजी राय देना नहीं है।

चरण 1: विवरणात्मक रिपोर्ट का स्वरूप बताइए विवरणात्मक रिपोर्ट में किसी घटना या विषय का तथ्यपूर्ण और क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत किया जाता है। इसमें क्या हुआ, कब और कहाँ हुआ, कौन शामिल था तथा घटनाक्रम क्या रहा, जैसी सूचनाएँ प्रमुख होती हैं। इसका उद्देश्य पाठक को घटना का स्पष्ट परिचय देना है। उदाहरण के लिए किसी नगर में आई बाढ़ की विवरणात्मक रिपोर्ट में प्रभावित क्षेत्रों, जलस्तर, क्षति और राहत कार्यों की जानकारी दी जाएगी।

चरण 2: विश्लेषणात्मक रिपोर्ट से अंतर स्पष्ट कीजिए विश्लेषणात्मक रिपोर्ट सूचना देने से आगे बढ़कर घटना के कारणों, उसकी पृष्ठभूमि तथा संभावित परिणामों की पड़ताल करती है। इसमें तथ्यों, आँकड़ों और विशेषज्ञों की राय के आधार पर विभिन्न पक्षों के संबंध समझाए जाते हैं। उसी बाढ़ पर विश्लेषणात्मक रिपोर्ट यह जाँच सकती है कि जलनिकासी की कमी, अतिक्रमण या प्रशासनिक तैयारी ने स्थिति को कैसे प्रभावित किया। इस प्रकार विवरणात्मक रिपोर्ट में घटना का ब्यौरा प्रमुख है, जबकि विश्लेषणात्मक रिपोर्ट में उसके क्यों और कैसे होने की विवेचना प्रमुख है।

चरण 3: निष्कर्ष विवरणात्मक रिपोर्ट घटना का व्यवस्थित ब्यौरा देती है, जबकि विश्लेषणात्मक रिपोर्ट प्रमाणों के आधार पर उसके कारणों, पृष्ठभूमि और प्रभावों को स्पष्ट करती है।

त्वरित सुझाव: अंतर समझाते समय एक ही घटना का उदाहरण लीजिए: उसका ब्यौरा विवरण है और उसके कारणों तथा प्रभावों की पड़ताल विश्लेषण है।

5(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

"फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों में बच्चे के प्रति माँ की ममता का अद्भुत वर्णन है।" कैसे ? उदाहरण सहित लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक की रुबाइयाँ घरेलू जीवन के सहज दृश्यों के माध्यम से माँ और बच्चे के आत्मीय संबंध को अभिव्यक्त करती हैं। ममता केवल भावना नहीं, बच्चे की देखभाल और उसकी प्रसन्नता के लिए किए गए छोटे कार्यों में दिखाई देती है।
- उदाहरण देते समय कविता के वास्तविक प्रसंगों को माँ के वात्सल्य, धैर्य और बच्चे के मन की समझ से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: लाड़ और देखभाल के प्रसंग समझें आँगन में माँ अपने चाँद जैसे बच्चे को गोद में लेकर हाथों पर झुलाती है और बार-बार हवा में उछालती है। बच्चे की खिलखिलाहट माँ के स्नेह का आनंदमय प्रत्युत्तर है। दूसरे दृश्य में वह बच्चे को निर्मल जल से नहलाती है, उसके

उलझे बाल सँवारती है और अपने घुटनों पर खड़ा करके कपड़े पहनाती है। इन क्रियाओं से उसकी कोमलता, सावधानी और आत्मीय देखभाल प्रकट होती है।

चरण 2: बालमन की समझ से ममता का संबंध जोड़ें दीवाली पर माँ बच्चे के मिट्टी के खिलौने जैसे घर में दीपक जलाती है। वह उसकी छोटी-सी दुनिया को भी महत्त्व देती है। जब बच्चा आकाश का चाँद पाने की ज़िद करता है, तब माँ उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर बहलाती है। वह उसकी इच्छा को कठोरता से दबाने के बजाय स्नेह और सूझबूझ से संतुष्ट करती है। इस प्रकार रुबाइयों में लाड़, सेवा और बालमन की पहचान मिलकर मातृत्व का सजीव चित्र बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष फ़िराक ने बच्चे को झुलाने, नहलाने, कपड़े पहनाने और दर्पण में चाँद दिखाने जैसे घरेलू प्रसंगों से माँ की ममता का अद्भुत चित्रण किया है। माँ बच्चे की शारीरिक देखभाल के साथ उसकी कल्पना और प्रसन्नता का भी ध्यान रखती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दो या तीन ठोस प्रसंग चुनें और हर प्रसंग के साथ स्पष्ट करें कि उसमें माँ का कौन-सा स्नेहपूर्ण गुण दिखाई देता है।

5(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

तुलसीदास ने पेट की आग को 'समुद्र की आग से बड़ी क्यों' कहा है ? कवितावली पाठ के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवितावली में तुलसीदास अपने समय की आर्थिक विषमता, बेरोज़गारी और दीनता का चित्रण करते हैं। पेट की आग भूख और आजीविका के संकट का रूपक है।
- समुद्र की आग अर्थात बड़वाग्नि से तुलना भूख की प्रचंडता को उभारती है। आशय भौतिक ताप की माप करना नहीं, मनुष्य के जीवन पर भूख के व्यापक प्रभाव को व्यक्त करना है।

चरण 1: भूख की विवशता स्पष्ट करें तुलसीदास बताते हैं कि किसान, मज़दूर, व्यापारी, भाट, सेवक और कलाकार सहित सभी लोग पेट भरने के लिए परिश्रम करते हैं। कोई पढ़ता है, कोई कला दिखाता है, कोई पहाड़ों पर चढ़ता और घने जंगलों में शिकार खोजता है। आजीविका का अभाव होने पर मनुष्य की सारी शक्ति भोजन जुटाने में लग जाती है। इसलिए भूख केवल एक व्यक्ति की शारीरिक वेदना नहीं, समाज के अनेक वर्गों की साझा समस्या है।

चरण 2: समुद्र की आग से तुलना का आशय बताएँ भूख की आग मनुष्य को उचित-अनुचित सभी प्रकार के कर्म करने के लिए विवश कर देती है। कवि उस अत्यंत दुखद स्थिति का भी उल्लेख करते हैं जिसमें पेट की खातिर लोग अपने बेटे-बेटियों तक को बेच देते हैं। इससे स्पष्ट है कि भूख मानवीय संवेदना और पारिवारिक संबंधों को भी संकट में डाल देती है। समुद्र की बड़वाग्नि की अपेक्षा पेट की आग अधिक प्रचंड कहना इसी असहनीय पीड़ा और नैतिक विवशता को रेखांकित करता है। कवि राम की कृपा के घनश्याम मेघ से इस दाह के शमन की आशा करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसीदास ने पेट की आग को समुद्र की आग से बड़ी इसलिए कहा है कि भूख मनुष्य को निरंतर पीड़ित करती है और उसे मर्यादा तथा आत्मीय संबंधों के विरुद्ध आचरण तक करने को विवश कर देती है। यह कथन तत्कालीन समाज की भीषण दरिद्रता का मार्मिक संकेत है।

त्वरित सुझाव: पेट की आग का अर्थ पहले भूख बताएँ, फिर रोज़ी के अनेक प्रयास और संतान बेचने की विवशता से उसकी प्रचंडता सिद्ध करें।

5(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'उषा' कविता में कवि ने 'सूर्योदय' को किसका जादू टूटना बताया है और यह जादू किन चीज़ों का है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' में सूर्योदय से पहले के आकाश का चित्र रंगों और परिचित घरेलू उपमानों से निर्मित होता है।
- यहाँ 'जादू' किसी अलौकिक घटना का नाम नहीं, बल्कि प्रभात के बदलते रंगों और प्रकाश से उत्पन्न सम्मोहक सौंदर्य का संकेत है।

चरण 1: जादू का आशय पहचानना कवि ने सूर्योदय को उषा के प्राकृतिक सौंदर्य का जादू टूटना बताया है। सूरज निकलने से पहले आकाश में रंग और प्रकाश लगातार बदलते हैं। इस समय दृश्य स्वप्न जैसा आकर्षक और रहस्यमय लगता है। सूर्य के उदित होते ही यह विशेष वातावरण समाप्त हो जाता है और दिन का स्पष्ट प्रकाश फैल जाता है। इसीलिए कवि कहता है कि सूर्योदय के साथ जादू टूटता है।

चरण 2: जादू रचने वाले बिंब स्पष्ट करना यह जादू भोर के आकाश की नीलिमा, शंख जैसी निर्मलता, राख से लीपे गीले चौके जैसे धूसरपन तथा काली सिल पर फैली लाल केसर जैसी लालिमा का है। कहीं आकाश स्लेट पर लगी लाल खड़िया जैसा दिखाई देता है। फिर नीले जल में झिलमिल करती गौर देह का बिंब उभरता है। ये रंगमय और दृश्यात्मक बिंब मिलकर उषा के कोमल, पवित्र तथा क्षण-क्षण बदलते सौंदर्य को साकार करते हैं। सूर्य निकलने पर इन्हीं रंगों और आकृतियों का सम्मोहन समाप्त होता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'सूर्योदय' उषाकालीन आकाश के रंगों, प्रकाश और उनसे बनते मोहक बिंबों का जादू टूटना है। यह जादू नीलिमा, धूसरपन, केसरिया लालिमा और झिलमिलाते सौंदर्य से बनता है, जो सूर्य निकलने पर दिन के सामान्य प्रकाश में बदल जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले 'जादू' को उषा का सौंदर्य बताइए, फिर कविता के रंगों और उपमानों के उदाहरण देकर सूर्योदय से उसका संबंध स्पष्ट कीजिए।

6(क). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

ढोलक की आवाज़ किस प्रकार से मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी ? 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'पहलवान की ढोलक' में ढोलक की ध्वनि विपत्ति के बीच जीवन-संघर्ष और साहस का प्रतीक बनती है।
- महामारी से पीड़ित गाँव में इसका प्रभाव शारीरिक उपचार का नहीं, बल्कि भय और निराशा से जूझते लोगों को मानसिक बल देने का है।

चरण 1: गाँव की भयावह परिस्थिति समझना गाँव मलेरिया और हैजे की चपेट में था। लगातार होती मृत्यु, गरीबी और इलाज के अभाव ने लोगों को असहाय बना दिया था। रात का सन्नाटा उनकी पीड़ा और मृत्यु के भय को और बढ़ा देता था। घरों से कराहने और रोने की आवाज़ें आती थीं। इस वातावरण में गाँव मानो जीवन की चेतना खो चुका था; इसलिए उसे 'मृत-गाँव' कहा गया है।

चरण 2: ढोलक से मिलने वाला जीवन-संदेश बताना ऐसी भयावह रातों में लुट्टन पहलवान की ढोलक का स्वर लगातार सुनाई देता था। उसकी ताल सन्नाटे को तोड़कर लोगों को यह अनुभव कराती थी कि अभी जीवन और संघर्ष शेष हैं। जिस तरह अखाड़े में ढोलक की ध्वनि पहलवान का उत्साह बढ़ाती थी, उसी तरह गाँव के रोगग्रस्त लोगों को भी वह मृत्यु से लड़ने और विपत्ति सहने का साहस देती थी। उसे सुनकर लोगों की शिथिल चेतना जागती और निराश मन को सहारा मिलता था। अपने दोनों पुत्रों की मृत्यु के बाद भी पहलवान का ढोलक बजाना इस संघर्षशीलता को और मार्मिक बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक की आवाज़ भय, शोक और निराशा में डूबे गाँव को साहस, आशा और जीवित रहने की प्रेरणा देती थी। वह मृत्यु का सामना करने का मानसिक बल जगाकर मृतप्राय गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी।

त्वरित सुझाव: 'संजीवनी' का अर्थ यहाँ आशा और संघर्ष की चेतना है; महामारी का वातावरण बताकर ढोलक से मिलने वाले मानसिक साहस को स्पष्ट कीजिए।

6(ख). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

नमक की पुड़िया ले जाने को लेकर सफ़िया के मन में क्या द्वंद्व था ? 'नमक' कहानी के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी 'नमक' में मानवीय संबंध और साझा सांस्कृतिक स्मृतियाँ राजनीतिक सीमाओं से अधिक प्रबल हैं।
- सफ़िया का द्वंद्व स्नेह से किए गए वचन को निभाने तथा सीमा पर लागू प्रतिबंध के बीच है। नमक केवल वस्तु नहीं, लाहौर से जुड़ी आत्मीयता का प्रतीक है।

चरण 1: सौगात और प्रतिबंध का टकराव भारत में सफ़िया से मिली सिख बीबी ने उसकी पाकिस्तान यात्रा के प्रसंग में उससे लाहौरी नमक लाने का अनुरोध किया था। उनके लिए वह अपने छूटे हुए वतन की याद था। सफ़िया उनकी इच्छा पूरी करना चाहती थी, पर अपने भाई से उसे मालूम हुआ कि नमक को सीमा पार ले जाने की अनुमति नहीं है। इस प्रकार एक ओर उसके सामने स्नेहपूर्ण आग्रह और अपना वचन था, दूसरी ओर सरकारी नियम का अवरोध था।

चरण 2: छिपाने अथवा सच बताने की दुविधा सफ़िया सोचती थी कि नमक की पुड़िया छिपाकर ले जाए या कस्टम अधिकारियों को साफ़-साफ़ बता दे। छिपाने पर पकड़े जाने और नमक जब्त होने की आशंका थी; लेकिन प्रेम की इस भेंट को चोरी की वस्तु की तरह ले जाना भी उसे उचित नहीं लगता था। अंततः वह इसे मुहब्बत की सौगात मानकर खुले रूप में ले जाने का निर्णय करती है। उसका यह निर्णय नियम से उपजी आशंका पर मानवीय विश्वास की विजय को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सफ़िया का द्वंद्व प्रतिबंध के कारण नमक छिपाने की विवशता और स्नेह की सौगात को सम्मानपूर्वक ले जाने की इच्छा के बीच था। उसने सच बताकर सिख बीबी से किया वचन निभाने का रास्ता चुना।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सिख बीबी का अनुरोध, नमक पर प्रतिबंध और छिपाने अथवा घोषित करने की दुविधा को क्रम से जोड़ें।

6(ग). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जाति-प्रथा आधारित श्रम विभाजन को लेखक ने स्वाभाविक विभाजन क्यों नहीं माना है ? व्यक्ति को स्वयं पेशा चुनने योग्य बनाने के लिए क्या अपेक्षित है ? पाठ के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. भीमराव आंबेडकर श्रम-विभाजन और जन्म पर आधारित श्रमिकों के विभाजन में अंतर करते हैं। उपयोगी श्रम-विभाजन व्यक्ति की क्षमता और रुचि को महत्त्व देता है।
- पेशे के स्वतंत्र चयन के लिए जन्म से थोपी गई सीमाओं का हटना और व्यक्ति की क्षमता विकसित करने वाले अवसर मिलना आवश्यक है।

चरण 1: जाति आधारित विभाजन की अस्वाभाविकता लेखक के अनुसार जाति-प्रथा पर आधारित श्रम-विभाजन स्वाभाविक नहीं है, क्योंकि उसमें व्यक्ति की रुचि, योग्यता तथा कार्यकुशलता को आधार नहीं बनाया जाता। उसका पेशा माता-पिता के सामाजिक स्तर और जन्म के अनुसार पहले ही निर्धारित कर दिया जाता है। इस व्यवस्था में श्रम के साथ श्रमिक भी ऊँच-नीच की श्रेणियों में बाँट दिए जाते हैं। इसलिए यह स्वतंत्र व्यक्तियों की क्षमताओं से विकसित हुआ विभाजन नहीं, सामाजिक बंधन से आरोपित विभाजन है।

चरण 2: पेशे के स्वतंत्र चयन की आवश्यक शर्तें व्यक्ति को स्वयं अपना पेशा चुनने योग्य बनाने के लिए उसकी अंतर्निहित शक्तियों और क्षमताओं का पूरा विकास होना चाहिए। इसके लिए उसे शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुकूल सामाजिक अवसर मिलना आवश्यक है। उसके चयन में जाति या वंश बाधक नहीं होने चाहिए। साथ ही, बदलती परिस्थितियों में उसे अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता भी मिलनी चाहिए। तभी उसकी रुचि और क्षमता का उपयोग हो सकेगा तथा समाज को कुशल और संतुष्ट श्रमिक मिल सकेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष जाति आधारित श्रम-विभाजन जन्म से पेशा थोपता है, इसलिए लेखक उसे स्वाभाविक नहीं मानते। स्वतंत्र पेशा-चयन

के लिए व्यक्ति की क्षमताओं का विकास, समान अवसर और व्यवसाय चुनने तथा बदलने की स्वतंत्रता अपेक्षित हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों हिस्सों का उत्तर दें: पहले जन्म आधारित निर्धारण का दोष बताएँ, फिर क्षमता-विकास और चुनाव की स्वतंत्रता की आवश्यकता लिखें।

6(घ). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

डॉ. भीमराव आंबेडकर की दृष्टि में आदर्श समाज के तीन आधार कौन-से हैं ? तीनों को उल्लेख करते हुए समझाइए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. भीमराव आंबेडकर के आदर्श समाज के तीन आधार स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता हैं। ये तीनों मिलकर ऐसी सामाजिक व्यवस्था बनाते हैं जिसमें जन्म या जाति के कारण किसी मनुष्य की गरिमा और अवसर सीमित न हों।
- आदर्श समाज परिवर्तनशील और परस्पर संपर्क वाला होता है। उसमें विभिन्न वर्गों के बीच विचारों तथा अनुभवों का आदान-प्रदान होता रहता है।

चरण 1: स्वतंत्रता का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति को जीवन, आवागमन और संपत्ति की स्वतंत्रता के साथ अपनी क्षमताओं के विकास तथा अपनी रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। जाति के आधार पर पहले से पेशा निर्धारित कर देना इस स्वतंत्रता का निषेध है। मनुष्य को केवल वंशानुगत काम में बाँधने के स्थान पर उसे अपनी योग्यता का उपयोग करने का अवसर देना आवश्यक है।

चरण 2: समता का अर्थ सभी मनुष्यों को समान मानवीय सम्मान और विकास के अवसर मिलने चाहिए। व्यक्तियों की शारीरिक क्षमता, सामाजिक परिस्थिति और प्रयास में अंतर हो सकता है; फिर भी इन अंतरों को जन्मगत ऊँच-नीच तथा भेदभाव का आधार नहीं बनाया जा सकता। समाज को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जिसमें किसी की जाति या पारिवारिक स्थिति उसके आगे बढ़ने में बाधा न बने।

चरण 3: भ्रातृता का अर्थ भ्रातृता का आशय परस्पर भाईचारे, अपनत्व और सहयोग से है। समाज के विभिन्न वर्गों में स्वतंत्र संपर्क हो और एक हिस्से का परिवर्तन दूसरे हिस्सों तक पहुँचे। लोग एक-दूसरे के सुख-दुख तथा सार्वजनिक हितों में सहभागी बनें। आंबेडकर के अनुसार यही सामूहिक जीवन लोकतंत्र को केवल शासन-पद्धति से आगे बढ़ाकर सामाजिक व्यवहार का रूप देता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार स्वतंत्रता व्यक्ति को अपनी राह चुनने देती है, समता उसे समान सम्मान और अवसर देती है तथा भ्रातृता सबको सहयोग और अपनत्व के सूत्र में जोड़ती है। आंबेडकर का आदर्श समाज इन तीनों मूल्यों पर आधारित है।

त्वरित सुझाव: तीनों आधार अलग-अलग लिखें और हर आधार को जातिगत बंधन, समान अवसर या सामाजिक भाईचारे के किसी स्पष्ट अर्थ से जोड़ें।

7(i)(क). "सिंधु सभ्यता मूलत: खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी।" कैसे ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में सिंधु सभ्यता के अवशेषों से उसके जनजीवन का परिचय मिलता है। किसी सभ्यता का खेतिहर और पशुपालक होना उसके भोजन, उत्पादन, भंडारण और पशुओं से जुड़े प्रमाणों के आधार पर समझा जाता है।
- नगरों का विकसित होना और कृषि-पशुपालन पर आधारित अर्थव्यवस्था होना परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं। नगरों की आवश्यकताओं की पूर्ति आसपास के कृषि-उत्पादन और पशुधन से होती है।

चरण 1: खेती और अन्न-भंडारण के प्रमाण पाठ में सिंधु क्षेत्र की उपजाऊ धरती तथा कृषि के प्रमाणों का उल्लेख है। वहाँ गेहूँ, जौ और कपास उगाई जाती थी। अनाज को सुरक्षित रखने के लिए बड़े भंडार भी थे। मोहनजोदड़ो में मिले अन्न-भंडार से स्पष्ट होता है कि खेती

केवल तत्काल भोजन की आवश्यकता तक सीमित नहीं थी, बल्कि उत्पादन और उसके संग्रह की व्यवस्थित परंपरा थी। कपास की खेती वस्त्र-निर्माण के लिए भी आधार प्रदान करती थी।

चरण 2: पशुपालन से जुड़े प्रमाण वहाँ मिले पशुओं के चित्रों वाली मुहरें, मूर्तियाँ और अन्य अवशेष मनुष्य तथा पशुधन के निकट संबंध का संकेत देते हैं। विशेष रूप से बैल की आकृतियाँ और बैलगाड़ी जैसे साधन खेती तथा ढुलाई में पशुओं के उपयोग को सामने लाते हैं। कृषि के साथ पशुपालन भोजन, श्रम और आवागमन की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था।

चरण 3: सभ्यता की मूल आर्थिक प्रकृति मोहनजोदड़ो की नगर-योजना, पक्के मकान और शिल्प-कौशल उसके विकसित शहरी जीवन का परिचय देते हैं, पर उस जीवन का पोषण कृषि और पशुपालन से होता था। अन्न-उत्पादन, अनाज के संग्रह और पशुधन के उपयोग को एक साथ देखने पर स्पष्ट होता है कि उसकी आर्थिक नींव धरती और पशुओं से जुड़ी थी। इसलिए लेखक उसे मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता कहते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष गेहूँ-जौ तथा कपास की खेती, अन्न-भंडार और कृषि व ढुलाई में उपयोगी पशुधन के प्रमाण सिद्ध करते हैं कि विकसित नगरों वाली सिंधु सभ्यता का मूल आधार कृषि और पशुपालन था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में खेती के प्रमाण और पशुपालन के प्रमाण अलग रखें; अंत में बताएँ कि इन्हीं से नगरों की आर्थिक आवश्यकताएँ पूरी होती थीं।

अथवा

7(i)(ख). 'डायरी के पन्ने' पाठ में "ऐन फ्रैंक की निजी भावनात्मक उथल-पुथल का दस्तावेज़ भी है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी निजी अनुभवों, इच्छाओं और मनोभावों की आत्मीय अभिव्यक्ति है।
- ऐन की किशोरावस्था की संवेदनाएँ युद्ध और छिपकर रहने की परिस्थितियों से जुड़ती हैं।

चरण 1: अकेलेपन और तनाव की अभिव्यक्ति ऐन फ्रैंक की डायरी नात्सी अत्याचारों का विवरण देने के साथ एक संवेदनशील किशोरी के अंतर्मन को भी सामने लाती है। गुप्त आवास में लगातार छिपे रहने से वह भय, घुटन और अकेलापन महसूस करती है। वह खुलकर बाहर जाना, प्रकृति को देखना तथा सामान्य जीवन जीना चाहती है; पर पकड़े जाने की आशंका इन सहज इच्छाओं को दबा देती है। इस प्रकार बाहरी परिस्थितियाँ उसकी भीतरी बेचैनी को और तीव्र करती हैं।

चरण 2: संबंधों, आकांक्षाओं और आत्मसंघर्ष का चित्रण ऐन को लगता है कि परिवार के लोग उसकी भावनाओं को पूरी तरह नहीं समझते। माँ के साथ मतभेद, अपनी बात कहने की इच्छा तथा प्रेम और आत्मीयता की तलाश उसके मन की उलझनों को प्रकट करते हैं। पीटर के प्रति उसका आकर्षण किशोर मन की निकटता की चाह को व्यक्त करता है। साथ ही वह अपनी कमजोरियों पर विचार करती है, स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाना चाहती है और स्त्रियों की स्थिति पर प्रश्न उठाती है। इसलिए डायरी में भय के साथ आशा, शिकायत के साथ आत्मपरीक्षण और असुरक्षा के साथ भविष्य के सपने भी मिलते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार डायरी ऐन के अकेलेपन, प्रेम, विद्रोह, आत्मचिंतन और भविष्य की आकांक्षाओं का जीवंत दस्तावेज़ है। उसमें ऐतिहासिक संकट के भीतर एक किशोरी की निजी भावनात्मक उथल-पुथल सुरक्षित है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में युद्ध के वर्णन तक सीमित न रहें; अकेलापन, पारिवारिक संबंध और किशोर मन की आकांक्षाएँ भी जोड़ें।

7(ii)(क). पुरुषों ने आरंभ से ही किस आधार पर स्त्रियों पर शासन किया है ? 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन सामाजिक असमानता की जड़ों पर प्रश्न उठाती है।
- शारीरिक बल और आर्थिक नियंत्रण के सहारे स्थापित प्रभुत्व योग्यता की श्रेष्ठता का प्रमाण नहीं है।

चरण 1: शासन के मूल आधार की पहचान ऐन फ्रैंक के अनुसार पुरुषों ने आरंभ से ही अपनी अधिक शारीरिक शक्ति के आधार पर स्त्रियों पर शासन किया है। शारीरिक रूप से अधिक बलवान होने के कारण पुरुष ने स्त्री को अपने अधीन रखा और समाज में अपने अधिकारों को प्रमुख स्थान दिलाया। अतः इस प्रभुत्व का मूल आधार बौद्धिक या नैतिक श्रेष्ठता नहीं, शारीरिक बल था।

चरण 2: निर्भरता से प्रभुत्व का स्थायी होना पुरुष कमाकर परिवार चलाने वाला बना और स्त्री को घर तथा संतान की देखभाल तक सीमित रखा गया। आर्थिक निर्भरता ने भी पुरुष का नियंत्रण मजबूत किया। ऐन इस व्यवस्था को स्वाभाविक न्याय नहीं मानती; वह स्त्रियों के श्रम, प्रसव की पीड़ा और समाज में उनके योगदान के सम्मान की आवश्यकता बताती है। इस संदर्भ से स्पष्ट होता है कि बल से उत्पन्न असमानता सामाजिक व्यवस्था में भी बनी रही।

चरण 3: निष्कर्ष पुरुषों ने मुख्यतः अपनी अधिक शारीरिक शक्ति के आधार पर स्त्रियों पर शासन स्थापित किया; स्त्रियों की आर्थिक निर्भरता और घरेलू भूमिका ने इस प्रभुत्व को बनाए रखने में सहायता की।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य आधार के रूप में शारीरिक शक्ति पहले लिखें; आर्थिक निर्भरता को उसके सहायक कारण के रूप में स्पष्ट करें।

अथवा

7(ii)(ख). मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना की विशेषताओं का उल्लेख अपने शब्दों में कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नगर-योजना से सार्वजनिक सुविधा, स्वच्छता और निर्माण संबंधी समझ का पता चलता है।
- मुअनजो-दड़ो में सड़कें, आवास, जलापूर्ति और जलनिकासी एक सुव्यवस्थित नगर के प्रमाण हैं।

चरण 1: सड़कों और भवनों का सुव्यवस्थित विन्यास मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना अत्यंत विकसित थी। मुख्य सड़कें सीधी और चौड़ी थीं तथा गलियाँ उन्हें समकोण पर काटती थीं। इससे नगर व्यवस्थित खंडों में बँटा था। ऊँचा दुर्ग-क्षेत्र और नीचे बसा नगर उसकी योजनाबद्ध बसावट दिखाते हैं। मकान पकी ईंटों से बनाए गए थे; उनमें आँगन, कमरे और स्नान की व्यवस्था मिलती है। घरों के प्रवेश प्रायः गलियों की ओर थे।

चरण 2: जल, सफाई और सार्वजनिक सुविधाएँ कुओं की उपलब्धता से जलापूर्ति की सुव्यवस्था का पता चलता है। घरों से निकलने वाला गंदा पानी नालियों में जाता था और नालियाँ ढकी हुई थीं। उनकी सफाई की व्यवस्था भी थी। विशाल सार्वजनिक स्नानागार जैसे निर्माण सामुदायिक सुविधाओं के प्रति सजगता दिखाते हैं। इस प्रकार नगर में आवास के साथ स्वच्छता, जलनिकासी और सार्वजनिक जीवन की आवश्यकताओं का समन्वय था।

चरण 3: निष्कर्ष सीधी सड़कें, समकोण पर मिलती गलियाँ, पकी ईंटों के मकान, कुएँ, ढकी नालियाँ और सार्वजनिक स्नानागार मुअनजो-दड़ो की विकसित नगर-योजना की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: विशेषताओं को सड़क, मकान और जल-सफाई के क्रम में लिखें; प्रत्येक के साथ एक ठोस उदाहरण दें।